

जीवन में पुण्य भर देने वाले
कविताएँ



विषय सूचि

| | |
|---|----|
| 1. वन्दे वन्दे | 1 |
| 2. जायेंगे सदा हम..... | 4 |
| 3. भगवान बुद्ध गुरु लोकनाथ तू..... | 7 |
| 4. बिना राग द्वेष मोह..... | 9 |
| 5. वैशाखी चाँदी..... | 12 |
| 6. जय जय..... | 14 |
| 7. दिल में करुणा भर जाए..... | 15 |
| 8. सम्बुद्ध तू हैं मेरे भगवन..... | 17 |
| 9. श्रीपाद वंदना..... | 19 |
| 10. सागर है तू..... | 21 |
| 11. नमन करे हम - धर्म गुण | 22 |
| 12. नमन करे हम - संघ गुण | 25 |
| 13. महा काश्यप थेर वंदना | 28 |
| 14. हे महाकारुणम हो नमो तुम्ही को | 34 |
| 15. बुद्ध तू ही मेरे भगवन..... | 36 |
| 16. तेरे करुणा से..... | 38 |
| 17. याद करो..... | 40 |
| 18. साधु साधु मेरे भगवान जी..... | 44 |
| 19. जय भगवन बुद्धा..... | 46 |
| 20. श्री सम्बुद्धत्व वंदना..... | 49 |

| | |
|-------------------------------|----|
| 21. देवता यहाँ आसमान में..... | 54 |
| 22. धर्म की गुण..... | 59 |
| 23. संघ की गुण..... | 61 |
| 24. सप्त बुद्ध वंदना..... | 64 |

नमो बुद्धाय !!!

1. वन्दे वन्दे

वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , भगवन बुद्ध को वन्दे
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , सत्य धर्म को वन्दे
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , आर्य संघ को वन्दे
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , इन तीशरण को वन्दे

क्लेश नहीं हैं तुम्हारे मन में , अर्हत हो तुम भगवा
असहाय ज्ञानी सम्मासंबुद्ध , केवल तुम हो भगवा
शील चरण गुण सिन्धु समाधी , महिमा लोचन भगवा
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , तुम ही हमारे भगवा

बोधिवृक्ष की छाया में तुम , पार गए हैं भगवा
सब जग के दुख मिट गये हैं , लोकविदु तुम भगवा
पर दुख दुखी तुम , करुणा सागर , महाकारुणिक भगवा
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , तुम ही हमारे भगवा

अमृत धारा बहत गई हैं , तुम्हारे मुख से भगवा
आये हैं सब , ज्ञान की प्यासे , शरण तुम्हारे भगवा
सुधर गये हैं पाप मिटा के , सारथी हो तुम भगवा

वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , तुम ही हमारे भगवा

ब्रह्म देव गण बनके दीन मन , चरण कमल को भगवा
नारी नर सब दुख से पारगत , शास्ता हो तुम भगवा
धन निर्धन या सुखी दुखी जन , स्नेह पायें हैं भगवा
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , तुम ही हमारे भगवा

अद्भुत अचंचल महाज्ञानी , बुद्ध बने तुम भगवा
उसी बुद्ध ज्ञान से , जग मन चमके , ज्योति बने तुम
भगवा

अंधेर कल्प दुख , बीत गये हैं , सूरज हो तुम भगवा
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , तुम ही हमारे भगवा

मन मोह श्याम अभी , रूप देह धर , राजसु कोमल भगवा
धर्म काय गुण , पुण्य यसस्वी , अचिंत हो तुम भगवा
महा ऋषि हो महामुनि हो , भगवा हो तुम भगवा
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , तुम ही हमारे भगवा

भगवा हमारे बुद्ध हमारे , शास्ता हमारे भगवा
धर्म तुम्हारे शरण हमारे , सबकुछ हो तुम भगवा
शरण गये हम शरण गये हम , शरण गये हम भगवा
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , तुम ही हमारे भगवा

वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , तुम ही हमारे भगवा
वन्दे वन्दे वन्दे वन्दे , तुम ही हमारे भगवा

2. जायेंगे सदा हम.....

जायेंगे सदा हम तथागत शरण में
जायेंगे सदा हम धर्म की शरण में
जायेंगे सदा हम संघ की शरण में
जायेंगे सदा हम मुक्ति की शरण में

लुम्बिनी की वन में , जनम लेके आया
देखें दुख जनम की , आँसू बहाया
खोजने को मुक्ति , राजमहल भी छोड़ाया
सिद्धार्थ गौतम , महाश्रमण बनाया

गयें हैं जग जग में , न कोई गुरु मिले हैं
न देव न ब्रम्हा , रास्ता दिखाए हैं
अकेले अकेले ही , जाना पड़ा है
छः साल में कठोरे , तपस्या कियें हैं

मिले अंत में तुमको , निर्वाण की रास्ता
चले पारमी बल से , विमुक्ति की आस्था
गयें दूर जब तक , न संसार बनाता
नए युग बने तुम , तथागत हुआ था

गया में निरंजर , नदी के किनारे
बैठें हैं तथागत , वैशाखी की दिन में
हिले बोधिपत्तें , हवा गुनगुना के
जीतें बुद्ध भगवन , मार सेना हराके

बहाके करुणा , गर्यें सारनाथे
कियें मुक्ति घोषण , सारे जग सुनाके
धर्म की ही चक्का , गर्यें हैं चलाके
देखी धरती माता , बड़ी मुस्कुराके

बताएं कृपा कर , धर्म सुख मिलाना
जलाए दीया दिल में , अंधेरा मिटाना
बनाएं दुनिया , न दुख में डुबाना
चलायें हमें तुम , सदा सुख दिलाना

कियें बुद्ध भगवन , मुक्ति चर्चा निभाके
चलें कुशीनारा , जीवन अंत आके
हुए जग की कम्पित , सोयें हैं तथागत
बूझे बुद्ध ज्योति , निर्वाण में चलाके

चलेंगे सदा हम , तुम्हें शरण बनाके
बचेंगे कुमार्गों से , ज्ञान ही बढ़ाके

रचेंगे मंदीर दिल की , धर्म में चलाके
पूजेंगे हम जीवन , श्रद्धा बनाके

तुम्ही है त्यागी , तुम्ही है ज्ञानी
तुम्ही लोकनाथे , तुम्ही है तथागत
तुम्ही मेव बुद्धा , तुम्ही मेव भगवन
तुम्ही सत्य नाम , सदा है प्रणाम
तुम्ही सत्य नाम , सदा है प्रणाम
तुम्ही सत्य नाम , सदा है प्रणाम

3. भगवान बुद्ध गुरु लोकनाथ तू.....

भगवान बुद्ध गुरु लोकनाथ तू
आयें हैं बोधिवृक्ष की इस छाया में
सुन्दर निर्वाण के लिए , सुन्दर निर्वाण के लिए
वन्दन करते हैं तुमको , वन्दन करते हैं

बैठ गये तुम , वजिरासन पे , हार गये हर मार सेना
(2)

बुद्ध बने तुम , जग के तथागत
भगवा ही तू हैं , भगवा ही तू हैं
तू हैं हमारे शास्ता आ आ

भगवान बुद्ध गुरु लोकनाथ तू
आयें हैं बोधिवृक्ष की इस छाया में
सुन्दर निर्वाण के लिए , सुन्दर निर्वाण के लिए
वन्दन करते हैं तुमको , वन्दन करते हैं

दुख दूर गये हैं , अब मुक्ति मिले हैं , सब जग में महिमा
चमकें हैं (2)

सूरज हो तूम् , निर्वाण दिखाए
भगवा ही तू है , भगवा ही तू है

तू है हमारे शास्ता आ आ

भगवान बुद्ध गुरु लोकनाथ तू
आये हैं बोधिवृक्ष की इस छाया में
सुन्दर निर्वाण के लिए , सुन्दर निर्वाण के लिए
वंदन करते हैं तुमको , वंदन करते हैं
आयें हैं हम , बनके भिखारी , दे दो हमें तुम शरण धरम
की (2)

पार चलेंगे तुम्हारे ही राह में
भगवा ही तू है , भगवा ही तू है
तू है हमारे शास्ता आ आ

भगवान बुद्ध गुरु लोकनाथ तू
आयें हैं बोधिवृक्ष की इस छाया में
सुन्दर निर्वाण के लिए , सुन्दर निर्वाण के लिए
वंदन करते है तुमको , वंदन करते हैं
वंदन करते है तुमको , वंदन करते हैं
वंदन करते है तुमको , वंदन करते हैं

4. बिना राग द्वेष मोह.....

बिना राग द्वेष मोह , शुद्ध मन की गुण है
शील समाधी गुण के सहित , निर्वाण को पाए
त्रिलोक में वन्दनीय , शास्ता है मेरे
“अरहं” गुण सहित मेरे , गुरु को वंदना है
सादु सादु हम बुद्ध की , शरण में जायेंगे

बिना गुरु के उपदेश के , सत्य मार्ग पाए
किये हुए पुण्य बल से , निर्वाण को पाए
दस बल गुण धारण से , सर्वज्ञानी हुए
“सम्मासम्बुद्ध” गुण के , वन्दनीय गुरु है
सादु सादु हम बुद्ध की , शरण में जायेंगे

क्लेश नष्ट करके मन में , पूर्व जनम देखें
जनम मृत्यु करम सभी , ज्ञान से ही देखें
अंत सहित ज्ञान से ही , सब कुछ जीते हैं
उत्तम विज्जा चरण की , मुनि को वंदना है
सादु सादु हम बुद्ध की , शरण में जायेंगे

सुन्दर मध्यम राह पे , तथागत गए हैं
पारिशुद्ध निर्वाण की , मन से युक्त हुए हैं

तन - मन वाणी हमेशा , सुन्दर होते हैं
“सुगत” गुण के तथागत को , हम नमन करेंगे
सादु सादु हम बुद्ध की , शरण में जायेंगे

मनुष्य देव ब्रम्ह आदि , सभी लोक देखें
करम के अनुसार सभी , जनम को पाते हैं
जनम मृत्यु से मुक्त का , राह जानते हैं
“लोकविदु” गुण के मुनि को , मेरी वंदना हैं
सादु सादु हम बुद्ध की , शरण में जायेंगे

महाकारुणिक हैं सदा , तथागत जगत के
उनके प्रवचन से सभी , सुधार जाते हैं
वे सभी भी संसार के , निर्वाण को पाते हैं
“अनुत्तरो पुरिस धम्म सारथी” , होते हैं
सादु सादु हम बुद्ध की , शरण में जायेंगे

ब्रम्ह देव सभी ज्ञान , सुनने आते हैं
बुद्धिमान मानव भी , सत्य ही सुनते हैं
देव मानव के उत्तम , शास्ता होते हैं
“सत्था देव मनुस्सानं विंयु” होते हैं
सादु सादु हम बुद्ध की , शरण में जायेंगे

सभी दुख के बारे में , सबको समझा के
दुख को नाश करने का , मार्ग दाता हैं
उत्तम चार आर्य सत्य , सबको बतायें हैं
“बुद्ध” गुण के तथागत को , मेरी वंदना है
सादु सादु हम बुद्ध की , शरण में जायेंगे

मेरे भगवन के ज्ञान से , विश्व चमकते हैं
शील समाधी गुण से , दुनिया वश में हैं
जल के ऊपर आये हुए , कमल के जैसे हैं
“भगवा” गुण के भगवन , हम नमन करेंगे
सादु सादु हम बुद्ध की , शरण में जायेंगे (3)

5. वैशाखी चाँदी.....

वैशाखी चाँदी पूनियां दिखायी
बहती नदी मन मोहीवाली
देव ब्रम्ह सब प्यार बनाई
भगवन गौतम ज्ञान बढ़ाये
बोलो जय जय बुद्ध हमारे (2)

देवी सुजाता खीर बनाई
भव दुख संकट सब मिट जाए
आयी - आयी नयी युग आयी
भगवन गौतम विजय को पाए
बोलो जय जय बुद्ध हमारे (2)

कल्प तरु तुम बुद्ध हमारे
अमृत की फल देनेवाले
सुन्दर नौका बुद्ध हमारे
भव सागर तैराने वाले
बोलो जय जय बुद्ध हमारे (2)

सूरज हो तुम बुद्ध हमारे
ज्ञान की कमल खिलाने वाले

चाँद भी हो तुम बुद्ध हमारे
बोलो जय जय बुद्ध हमारे (2)

राजहंस तुम बुद्ध हमारे
मुक्ति नदी में रहनेवाले
महामेघ तुम बुद्ध हमारे
अमृत वर्षा देनेवाले
बोलो जय जय बुद्ध हमारे (2)

महीमा लोचन बुद्ध हमारे
सर्वलोक को देखनेवाले
सर्वज्ञानी तुम बुद्ध हमारे
बोधगया में रहनेवाले
बोलो जय जय बुद्ध हमारे (3)

6. जय जय.....

जय जय जय भगवान बुद्ध की
जय जय जय भगवान बुद्ध की

निरंजरा की नदी किनारे , बोधगया धरती पर
बोधिवृक्ष की शीतल छाया में , वजिरासन पर बैठे
हार गए हैं मार सेना , भगवन बुद्ध ही जीते
जय जय जय भगवान बुद्ध की (2)

जन्मों जनम में पुण्य बढ़ाके , पारमी बन के आया
निर्वाण मार्ग पर चलके अकेले , नष्ट किये हैं माया
सम्बुद्ध तथागत भगवन गौतम , मोक्ष की धाम बनाया
जय जय जय भगवान बुद्ध की (2)

पुण्य पाप कर दुनिया वाले , स्वर्ग नरक में डूबे
देखें हैं भगवान ज्ञान से , करुणा स्रोत बहावे
तैराने में भव सागर से , मुक्ति की नौका बनाये
जय जय जय भगवान बुद्ध की (2)

फाड़ दिए हैं माया की पर्दा , देखें जग की अनात्मा
गूंज रहे हैं तथागत महीमा , मुक्ति की डमरू बजाता

सारे जग इंसान के दिल में , आज भी स्वर है सुनाता
जय जय जय भगवान बुद्ध की (4)

7. दिल में करुणा भर जाए.....

दिल में करुणा भर जाए
वैर क्रोध भय मिट जाये
वैर क्रोध भय मिट जाये

क्यों दूसरों को बुरे नजर से , निंदा कठोरे अपमान बनाते
क्यों अब जग में युद्ध चलाके , कदम कदम में हिंसा ही
कराते

देखें प्यार से इंसान , रहें खुशी से बिना नुकसान
रहें खुशी से बिना नुकसान

चाहे हिंदु भी हो मुसलमानी हो , सिख ईसाई या कोई
अनुयायी
सब एक बनाके जग में रहे कब , अब नहीं बने तो दुख दूर
जाये कब
देखें दुखी जगत संसार , न जानते भवसागर की पार
न जानते भवसागर की पार

चाहे प्रेम जग को चाहते हैं सुरक्षा , चलाओ हमेशा धर्म की
ही चर्चा

बनाएं दुनिया छाता की छाया में , रहे मिल-जुल कर ममता
की काया में

मैत्री भाव बने आत्मसाध , बुद्ध की ज्ञान करे हम याद
बुद्ध की ज्ञान करे हम याद

भगवान बुद्ध की शान्ति की पथ में , चले बैठ के हम धर्म
की ही रथ में

दुख दूर करेंगे सुख फैलायेंगे , मुक्ति सरोवर में खुशी से
रहेंगे

मैत्री भाव बने आत्मसाध , बुद्ध की ज्ञान करे हम याद
बुद्ध की ज्ञान करे हम याद

दिल में करुणा भर जाए

वैर क्रोध भय मिट जाये

वैर क्रोध भय मिट जाये (2)

8. सम्बुद्ध तू हैं मेरे भगवन.....

मेरे भगवन है तू , मेरे शरण भी तू
भगवन तू मेरे शास्ता भी तू

लोभ क्रोध को त्याग के , मोह मिटाए
पवित्र मन वाले , अरहं तू
आर्य सत्य को जान के , निर्वाण को पाए
सम्बुद्ध तू ही है मेरे भगवन

जिनके के विद्या , अनगिनत है
आचरण भी , निर्मल है
स्वर्ण काय वर्ण के मेरे भगवन

देव मानव सबके गुरु तू , जग के शान्ति दाता है तू
महाकरुणा दिल है मेरे भगवन
सर्वज्ञानी भी तू , सर्वव्यापी भी तू
गुरु हो तू मेरे लिए मेरे भगवन

ज्ञानी सूरज तू , अंधकार गगन में
शीतल चाँद भी तू मैत्री दिल वाले
अंधकार में ज्योति तू है , गहरी प्यास में पानी तू है

आँसू पोछने वाले मेरे भगवन

शरण जायेंगे सदा तुम्ही को , नमन करेंगे मेरे गुरु
मेरे जीवन ज्योति तू हो सदा
मोह - माया में फँस के रहते समय में
सत्य दिखाए मेरे भगवन
सारे पाप को त्याग के पुण्य करेंगे
मन भी जीतेंगे मेरे भगवन

पैर फिसल के गिरते समय में , ना गिरे हम तेरे पथ से
तेरे बिना हम को कोई नहीं
मेरा सारे बुराई मिटा दे , मेरे मन भी शांत करा दे
तेरे मन की सुख मुझे दे भगवन

मेरे भगवन है तू , मेरे शरण भी तू
भगवन तू मेरे शास्ता भी तू (2)

9. श्रीपाद वंदना.....

पैंतालीस सालोभर , भारत में पधारें
हमारे ये तथागत की , स्वर्ण वर्ण श्रीपाद
करके दर्शन हमेशा , तथागत की श्रीपाद
नमन हो सदा - सदा , भगवन की श्रीपाद

चक्र हजारों भरके , तलवा में मुनि के
कमल की पंखुड़ी जैसे , प्रकाशमय है श्रीपाद
करके दर्शन हमेशा , उन सुन्दर श्रीपाद
नमन हो सदा - सदा , भगवन की श्रीपाद

एक सौ आठ कारण हैं , खूबसूरत श्रीपाद
लम्बी एड़ी है उसमे , स्वर्ण वर्ण श्रीपाद
करके दर्शन हमेशा , भगवन की श्रीपाद
नमन हो सदा - सदा , भगवन की श्रीपाद

लुम्बिनी की साल वन में , सात कदम रखना
स्वागत करके चरण को , कमल पुष्प खिलना
करके दर्शन हमेशा , उन उत्तम श्रीपाद
नमन हो सदा - सदा , भगवन की श्रीपाद

असित ऋषि के ललाट में , लग गये हैं श्रीपाद
पिता श्री के नमन पाए , मासूम की श्रीपाद
करके दर्शन हमेशा , उन तथागत की श्रीपाद
नमन हो सदा - सदा , भगवन की श्रीपाद

महल तल में यशोधरा , राहुल को दिखा के
सुन्दर गाना गाई , श्री चरण दिखाके
करके दर्शन हमेशा , भगवन की श्रीपाद
नमन हो सदा - सदा , तथागत की श्रीपाद (3)

10. सागर है तू.....

सागर है तू महाकरुणा के
आसमान है तू प्रजा के विषय में
निर्मल है तू सभी आचरण में
ज्योति भी तू है अंधकार जगत में

तू मेरी शरण मेरे मार्ग दाता
मिटा दे हमेशा अज्ञान जगत के
शरण जायेंगे नमन करेंगे
जान भी देंगे , तू हो मेरे गुरु सदा

हे मेरे तथागत नाथ जी
सारे जगत के स्वामी जी
अनंत शील समाधी भी
अनंत प्रजा की है

दिल दियें हम हमेशा तुझे
सबकुछ तू है , ज्ञानी भी तू है
भगवन तू है , बुद्ध तू ही है
बुद्ध तू ही है , बुद्ध तू ही है

11. नमन करे हम - धर्म गुण

नमन करे हम नमन करे हम
सद्धर्म को नमन करे... (2)

भगवान तथागत, वैरागी मुक्ति से
शीतल मन को पाया... (2)
सब देव ब्रम्ह गण, बुद्ध वाणी सुन कर
दिव्य शांति सुख पाया... (2)

जग पाप शोक दुःख, मद-मोह क्रोध मन
मिट जाए सब माया... (2)
समाधी शील गुण, ध्यान-श्याम धन
बन के नई युग आया... (2)

नमन करे हम नमन करे हम
सद्धर्म को नमन करे... (2)

वरना इसी ऋषिपतन से, भगवान ज्ञान की
सूरज की रश्मि आया... (2)
मृगदाय से जब, निर्वाण की पद
जग - जग में गूंज के आया... (2)

हितकारी शरण जन, मन-मोह ब्रम्ह स्वर
भगवान कि मुख से आया... (2)
परिशुद्ध धर्म पद, मैत्री भर के मन
सम्पूर्ण रूप से आया... (2)

नमन करे हम नमन करे हम
सद्धर्म को नमन करे... (2)

इस जीवन में सुख, पावन की गुण
न देर हुए मिल पाया... (2)
संसार के दुःख, मिट जाने के पल
तेरे सामने आया... (2)

मत छोड़ो ये क्षण, अति भाग्य के क्षण
सम्बुद्ध युग में आया... (2)
आओ तुम देखो, ज्ञान की मन से
भगवान सत्य दिखाया... (2)

श्रद्धा शील गुण, समाधी शांति सुख
सबकुछ तुम अपनाना... (2)
हर वैर क्रोध भय, जब पाप नीच गति
मन वाणी से हटाना... (2)

कल्याण के सज्जन, प्यार से सुनकर
बुद्ध वाणी को प्रेम बढ़ाया... (2)

नमन करे हम नमन करे हम
सद्धर्म को नमन करे... (2)

जनम जनम के, जब पुण्य बढ़ाके
धर्म में सज्जन आया... (2)
कोई अरहंत हुए हैं, जो पार गए
निर्वाण ने अमर बनाया... (2)

श्रद्धालु जन, आर्य मार्ग में
अनेक सुख फल पाया... (2)
भगवान के, अति सुन्दर पथ में
ऐसे सज्जन आया... (2)

निर्वाण धर्म गुण, सम्बुद्ध वाणी सब
आज भी याद बनाया... (2)

नमन करे हम नमन करे हम
सद्धर्म को नमन करे... (4)

12. नमन करे हम - संघ गुण

नमन करे हम नमन करे हम
अर्हत गण को नमन करे , नमन करे

सारिपुत्त महा ऋषि तुम हैं यहाँ
ज्ञान की शिखरे चले गए , चले गए

मोग्गलान हे महा ऋषि
सर्वसिद्ध तुम को आयें , तुमको आयें

गुरुपा गिरी में महा काश्यपी
तुमके पीछे देव गणे , देव गणे

आनंद हे महा पुण्यवान
तुम है भगवन की छाया , भगवन की छाया
बुद्ध वाणी सब तुम्हारे मन में
आनंद बनाके सुख पाया , सुख पाया

हे राहुल तुम भी आये हैं
तारा बनके अंधियारे , अंधियारे

अनुरुद्ध तुम विषमिit नयने
दिव्य ब्रम्ह को देख लिए , देख लिए

अंगुलिमाल तुम्हारे दिल से
प्यारे करुणा स्रोत बहे , स्रोत बहे
हे शिवली महा ऋषि तुम
ये भोजन बाँटे कैसे , बाँटे कैसे

ऐसे हैं भगवान तुम्हारे
उत्तम महा ऋषि चेल गणे , चेल गणे
जग के अंत गए हैं वो सब
भगवन दिल में बैठ गये , बैठ गये

अटल अकम्पित वैरागी मन
मान सरोवर में हँस से , उत्तम हँस से
मृत्यु जनम से मुक्त हो गए
अमर रहे निर्वाण सुखे , निर्वाण सुखे

सिंहनाद किये तुम जग-जग
बुद्धं शरणं गच्छामि , गच्छामि
गंगा यमुना सरस्वती सरभु
सागर में सब एक बने , एक बने

चार वर्ण गण भक्ति भाव से
आर्य संघ में डूब गए , डूब गए
न जाति भेद भय न वैर क्रोध मन
मायागति सब मिट गए , मिट गए

दया मैत्री मुदिता करुणा
अमृत वाणी दान दिए , दान दिए

नमन करे हम नमन करे हम
आर्यसंघ को नमन करे , नमन करे

नमन करे हम नमन करे हम
महा ऋषि मुनि को नमन करे , नमन करे

नमन करे हम नमन करे हम
अर्हत गण को नमन करे , नमन करे... 3

13. महा कश्यप थेर वंदना

महा कश्यप महामुनि, महा कश्यप महामुनि
वन्दे वन्दे महामुनि... (2)

तुम्ही है पुण्यवान, तुम्ही है शीलवान
तुम्ही है महाज्ञानी... (2)
तुम्ही है गुणवान, तुम्ही है बलवान
तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

भगवान बुद्ध जी का, धर्मपुत्र तुम है
तुम्ही है बुद्ध शासन में, सुगत चीवरधारी
स्वर्ण वर्ण तू है, बुद्ध वर्ण तू है
तुम्ही बुद्ध शासन में, बुद्ध लीलाधारी

भगवान बुद्ध जी का, महा श्रावक हैं तू
तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो
सरल जीवन है तुम्हारा, महा धुतांगधारी तू
ब्रम्ह-देव गण आये हैं, तुम्हारे ही चरणों में

परम दयालु है तू, परम पूजित है तू
तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

संतुष्ट है तू, मिले चीवर के लिए
अनासक्त है तू, मिले भोजन के लिए
वैरागी है तू, मिले औषध के लिए
तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

महा मुनि है तू, महा ऋषि है तू
धर्म रक्षक है तू, जगत सूरज है तू
पूर्ण चंद्र है तू, चम चमाके गए तू
मुनि अरहंत है तू, खिला कमल जैसा तू

तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

आकाश में गए तू, महा ऋद्धि धारी तू
आसान से चढ़ जाते तू, गुरुपा गिरी शिखर में
भार लिए हैं सब गुण तू, महा गुणवर धारी
हिमाल वन में जाते तू, वैरागी सुख वाले तू

तुम्ही महा गुरुवर जी...
कोटि-कोटि प्रणाम हो... (2)

भष्म किये हैं क्लेश तू, हमेशा शीतल वाले तू
अमृत मुक्ति सागर में, नित्य डूबने वाले तू
जगमग ज्योति बनाये तू, सर्वोत्तम गुण वाले तू

तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

शोक पीड़ा नहीं है, मुक्त सुख दिल वाले तू
अनेक साधना महिमा से, अलौकिक सुख पाए तू
महा श्रमण है तू, महा सन्यासी है तू
आईये महामुनि वर जी, हमारे रात्री सपने में... (2)

तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

भगवान बुद्ध जी देखें हैं, तुम्हारे ध्यान कि महिमा
तुलना करके बतायें हैं, बुद्ध ध्यान कि महिमा
अनुबुद्ध है तू, ज्योति है अंधियारे में
तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

गए है तू घर-घर, नया मेघ-मान वाले
नया चाँद तू है, नया हमेशा दिखते है
दुखियारे जन तू खोज-खोज, दिव्य सुख बांटें हैं तू
साधुवाद सब देते हैं, गरीबों का मुनि तू

तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

दुखियारे नारी ने, दिए हैं खिचड़ी तुमको
दान फल से उसको, दिव्य सुख पाए हैं

कोढ़ी-कुष्ट रोगी तुमको, भिक्षा पूजा कर रहा था
उसका उंगली तुम्हारे पात्र में, पीप साथ गिर जाता

अद्भुत है महामुनि वर तू, विशिमत है महामुनि वर तू
बिना किसी घृणा से, महाकारुणिक मन से
हटा कर अंगुली तू, स्वीकार किये हैं भिक्षा
तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

गरीब नारी ने तुमको, फरी पूजा कर खुशी से
दिव्य महल सुख पायें, सुख भोजन मिल जाए
चोरी से वो वापस आई, कुटी आँगन झाड़ू लगाई
काश्यप मुनि देख उसको, करुणा मन से चला दिए

रो-रोकर वो आसमान में, तुमको नमन किये हैं
तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

बैठ गए निर्वाण समाधी, सात दिन सुख पाए हैं
समाधी से उठ के आयें, गरीबों खोजते जाए
इन्द्र जी भी पुण्य प्यासे, गरीब वेश में आयें
महामुनि तू उसका झोंपड़ी से, आए करुणा मन से

भोजन लिए हैं इन्द्र जी का, फैल गये हैं दिव्य सुगंध
तुम्ही हमारे गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

क्यों इन्द्र जी ऐसे आयें, तुमको दान दिए ऐसे
पुण्य प्यास वाले वो, झोंपड़ी बनाके आए
महाकाश्यप मुनिवर जी को, अद्भुत प्यार बनायें
तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

महाकाश्यप मुनि तुम्हारा, आयु एक सौ बीस हुए
दीया बुझा जाना जैसा, परिनिर्वाण काल भी आए
भक्त जन रो-रो रहें, तुम हो गगन में आयें
शीतल निर्वाण के लिए, आये हैं गुरुपा में

तुम्ही महा गुरुवर जी...
कोटि-कोटि प्रणाम हो... (2)

देव-ब्रम्ह रोते आयें, तुम्हारे पलंग सजाये
दिव्य पुष्प मालाओं से, गुरुपा सुगंध भराए
मैत्री बुद्ध जी आने तक, गुफा ढकने का संकल्प लिया
महाकाश्यप मुनि जी, निर्वाण सुख में डूब गया

तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो... (2)

गुरुपा पर्वत के शिखर में, गूंज-गूंज जाए नाम तुम्हारा
देव-ब्रम्ह दानव राक्षक सब, गुरुपा सुरक्षा पाया
मैत्री मुनि के सामने तू, कपूर जैसा बूझ जाएगा

तुम्ही महा मुनिवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो

तन-मन वाणी से हमसे, आपको गलती हुए तो
माफी तुमसे माँगेंगे, सिर झुकाकर नमन करेंगे
अनंत असीमित गुण वाले, हर पल तुमको याद करेंगे
तुम्ही महा गुरुवर जी, कोटि-कोटि प्रणाम हो... (3)

14. हे महाकारुणम हो नमो तुम्ही को

त्याग के सबकुछ सम्पत
निकले हैं उन तथागत
प्यार करके सब जग को
त्यागें हैं अपनी खुशियाँ

निर्मल है तुम में
करुणा है तुम में
कृपा किये तुम सब जग को

आयें हैं तुम उरुवेला में
शुरु किये दुख तपस्या को
त्यागें हैं तुम सभी खुशी को
भोगे हैं तुम जग के दुख को

छह साल बीत गये
मुक्ति भी नहीं मिले
अप्राण हुए तेरे तन - मन को
हे महाविरम , हो नमो तुम्ही को

हे सत्य त्रिभुवनम , हो नमो तुम्ही को

हे महा कारुणिम , हो नमो तुम्ही को
हे अमृत दायकम , हो नमो तुम्ही को

आयें हैं तुम सुजाता में
बैठे हैं तुम बर के निचे
पूजा किया खीर सुजाता ने
ताकत मिले निर्वाण के लिए

पीपल के निचे में , वजिरासन पर ही
सम्बुद्ध बन गए तुम सब जग के
नमन हो सदा , तथागत सुगत को
नमन हो सदा , उन महाज्ञानी को

नमन हो सदा , भगवान सुगत को
नमन हो सदा , उन जगत नाथ को

15. बुद्ध तू ही मेरे भगवन.....

भगवन भी तू है , तथागत तू है
बुद्ध तू ही , मेरे भगवन
भगवन भी तू है , तथागत तू है
बुद्ध तू ही , मेरे भगवन

राग मिटाके मन को शुद्ध कर
लोभ क्रोध को नष्ट किये हैं
वीतरागी तुम मेरे भगवन
ज्योति जलायें पूरे जगत में
शान्ति दिलायें सभी के मन में

लोक के नाथ तू , धम्मराज मुनि
रोग नाश करते भगवन
पूरे विश्व को सुख ही दिलाये
दूर हुए दुख तुझसे भगवन

अंगुलिमाल को , कुण्डलकेशी को
सोपाक सुनीत को पूरे जगत को
अमर सुख दिए तू भगवन
नमन करूँ मैं सदा तुम्ही को

शरण जाऊं मैं सदा तुम्ही को

नाग देव सुर ब्रम्ह राज सब
शरण गए तुझको भगवन
पाप मिटाके शान्ति सुख दिए
हमारे तथागत तू भगवन

तेरे चरण से भारत धरती
धन्य हो गई तेरी कृपा से
हमें भी शरण दे भगवन
तुझसे बिना कुछ नहीं कहीं भी
तू मेरे लिए हो सबकुछ भी

भगवन भी तू है , तथागत तू है
बुद्ध तू ही , मेरे भगवन
बुद्ध तू ही , मेरे भगवन

16. तेरे करुणा से.....

तेरे करुणा से सारे जगत के
मन परेशानियाँ सब बह गए
हे भगवन तू मेरे लिए आज भी
जानी सूरज की जैसे प्रकाश हैं

चरण रखे हैं भेद को त्यागके
सुखी-दुखी जन धन्य हुए
दुख को सह कर भूख - प्यास से
सर्वजन को हीतकार किये

तेरे ज्ञान से शान्ति ही मिली
मानवता ही जग में जाग उठी
मैत्री करुणा ही सब दिल में बसे
क्रोध नफरत की दानवता मिट गई

हे भगवन तुझे प्रणाम हो
हे तथागत तुझे ही धन्य हो
हे मुनिवर तुम्ही अनन्य है
हे ऋषिवर तू मेरे लिए शरण है

तथागत मुख से ज्ञान की गंगा
बह गई सब धन्य हुए
देव मानव सब सुख पाकर
तथागत की अनुयायी बने

उन भगवन से हो मेरे शरण
उन भगवन से हो मेरे रक्षाकरण
सुख मिल जाए बाधक दूर हो
मेरे मन भी भगवन के जैसे हो

जागे शान्ति ही सबके हृदय में
सुख मिल जाए सारे प्राणी को
क्रोध दुश्मनी लालच दूर हो
प्यार करुणा और त्याग ही राज हो

तेरे करुणा से सारे जगत के
मन परेशानियाँ सब बह गए
हे भगवन तू मेरे लिए आज भी
जानी सूरज की जैसे प्रकाश है

हे भगवन तू मेरे लिए आज भी
जानी सूरज की जैसे प्रकाश है

हे भगवन् तू मेरे लिए आज भी
जानी सूरज की जैसे प्रकाश है

17. याद करो.....

याद करो , याद करो तुम
याद करो तुम , याद करो

मानव बनके , इस धरती पर
क्यों तुम आया , याद करो
चीर काल नहीं है , तुमको रहना
वापस जाना , याद करो

अमीर - गरीबे , काले - गोरे
जाति - भेद कभी , मत मानो
पुरुष महान है , नीच है महिला
ऐसे कभी तुम , मत मानो

ये पढ़े लिखे हैं , अनपढ़ हैं वे
भेदभाव कभी , मत देखो
माँ के गर्भ में , मानव बनके

जिस दिन आये , इस जग में

उस दिन से जब , मर जाने तक
मानव को तुम , प्यार करो
याद करो , याद करो तुम
याद करो तुम , याद करो

चाहते हैं , रोगी को उपकार
सहाय कर , खुशी हो जाओ
गर्भवती आई तो , गाड़ी में
अपना जगह उनको , दे दो

अनाथ बनके , वृद्धों हैं दुख से
दया से उन्हें , उपकार करो
दुख से हैं , सब जग में बच्चें
स्नेह भरकर , प्यार करो

याद करो , याद करो तुम
याद करो तुम , याद करो

आये हैं तो कोई , बनके भिखारी
बहाओ स्रोत तुम , करुणा से
मात - पिता हैं , तुम्हारे देवता

सदा उन्हीं को , सम्मान करो

गुरुजन तुमको , राह दिखाए
उनकी सेवा , याद करो
साधु संत जो , ज्ञान बताते
श्रद्धा मन से उन्हें , दान करो

मैत्री भाव तुम , बना लो हृदय में
कभी किसी से मत , वैर करो
नफरत क्रोध , अपमान हटा दो
द्वेष चित्त से , दूर रहो
दूसरों की , उन्नति देखकर
जलन मत करो , खुश हो जाओ
भय - रोमांच कभी , किसी को न देना
दयानुकम्पा फैला , दो

अप्रिय कटुक , अपमान या निंदा
दूसरों को कभी , मत बोलो
प्यार एकता , सहनशीलता
मधुर वाणी , सबको बोलो
उत्तर दक्षिण , पूर्व पश्चिम
सर्व दिशा में यह , फैल जाए

मैत्री भाव , सदा रह जाए
सारे जग , एक साथ रहे

मैत्री भाव , सदा रह जाए
सारे जग , एक साथ रहे
मैत्री भाव , सदा रह जाए
सारे जग , एक साथ रहे

याद करो , याद करो तुम
याद करो तुम , याद करो
याद करो तुम , याद करो
याद करो तुम , याद करो

18. साधु साधु मेरे भगवान जी.....

साधु साधु मेरे भगवान जी
तू हो सब के स्वामी
वंदना है वंदना (2)

तेरे ज्ञान से इस जग को
शान्ति सुख ही मिलते रहेगी
जग में झगड़ा मिटेगा
तेरे ज्ञान से स्वामी (2)

सर्वज्ञानी हो तुम इस जग के
धरमनाथ हो तुम हम सबके
करुणा सागर हो तुम
सुगत तथागत स्वामी (2)

पाप को हम त्याग करेंगे
पुण्य धरम हम अपनायेंगे
मन को शुद्ध करेंगे
तेरी पथ में स्वामी (2)

फैल जाए मानवता जग में

मैत्री हो मानव के दिल में
ज्ञान की दीया जलायें
शान्ति की नारा लगायें (2)

चले चले हम शान्ति की पथ में
बोयें दिलों में ज्ञान की बिजें
प्रेम से मिले - जूले कर
करुणा दया मनाकर (2)

साधु साधु मेरे भगवान जी
तू हो सब के स्वामी
वंदना है वंदना (4)

19. जय भगवन बुद्धा.....

जय भगवन बुद्धा , हे जय भगवन बुद्धा
धर्मचक्र ज्योति से , जगमग जग करता
हे जय भगवन बुद्धा

शाक्य श्रमण मुनि बनके , बोधगया आया
बुद्धा बोधगया आया
मार पराजय कीन्हा , अलौकिक ज्ञान पाया
हे जय भगवन बुद्धा

तुम करुणा के सागर , महाज्ञानी बुद्धा
बुद्धा महाज्ञानी बुद्धा
सुर नर मुनि सब गावै , तेरी चरणन गाथा
हे जय भगवन बुद्धा

तुम हो अगम - अगोचर , दरश दिखा जा बुद्धा
बुद्धा दरश दिखा जा बुद्धा
तेरी ज्ञान से मानव , अम्बर चढ़ जाता
हे जय भगवन बुद्धा

सूरज चंदा जैसी मुख से , सरस आभा बरसे

बुद्धा सरस आभा बरसे
जो नर निसदिन ध्यावै , अमृत सुख पाता
हे जय भगवन बुद्धा

हे जगत के स्वामी , दिव्य दृष्टि दाता
बुद्धा दिव्य दृष्टि दाता
शरण तिहारी आयो , कृपा करो भगवन
हे जय भगवन बुद्धा

तेरी शरण जो आया , आर्यशील पाया
बुद्धा आर्यशील पाया
अष्टांगिक पथ चलकर , निर्वाण सुख पाता
हे जय भगवन बुद्धा

तू अविचल - अविनाशी , दुख - भंजन कर्ता
बुद्धा दुख - भंजन कर्ता
अद्भुत तेरी महीमा , समझ नहीं आता
हे जय भगवन बुद्धा

भक्त जनों के संकट , पल में दूर करे
बुद्धा पल में दूर करे
तुम बिन कोई न दूजा , मेरा मन भाता

हे जय भगवन बुद्धा

जय भगवन बुद्धा , हे जय भगवन बुद्धा
धर्मचक्र ज्योति से , जगमग जग करता
हे जय भगवन बुद्धा (3)

20. श्री सम्बुद्धत्व वंदना.....

पूर्ण करके पारमी गुण , जनम को पाये हैं
महा कठिन दुख सहकर , जग सुख दिए हैं
मन पवित्र कर खुशी से , आयें दृढ़ता से
कोन हैं ये महामुनि जी , पुण्य से आये हैं
ये हमारे बोधिसत्व , तथागत बनेंगे

पारमी को पूर्ण करके , तुसित में रहते हैं
संसार पर दया करके , धरती पे आये हैं
साल लुम्बिनी वन में , सल कुसुम खिले हैं
यहाँ कोन पधारे हैं , सात कदम रख के
बोधिसत्व हैं ये मेरे , तथागत बनेंगे

स्नेह भरकर पुत्र पर ही , देख रही है माँ
पकड़ के वो साल वृक्ष को , मुस्कुराती हैं माँ
बोधिसत्व को देखकर , अनुकम्पा की हैं माँ
कोन हैं ये खुशहाली , बोधिसत्व के माँ
महामाया देवी हैं , मेरे मुनि जी के माँ

देव - ब्रम्ह पधारे हैं , भरके गगन तल में

रक्षा करके पुत्र को , छत्र उढ़ाये हैं
दायें हाथ उठाकर के , मधुर स्वर से बोले
कोन हैं ये महापुत्र , सिंहनाद किये हैं
ये हैं मेरे बोधिसत्व , बुद्धत्व जो पायें

जगत के दुख को देखकर , हृदय हुए कम्पित
यशोधरा राहुल को , सदा त्याग किये हैं
कृपा करके सभी जग को , सुख त्याग दिए हैं
कोन हैं ये वीर्य पुत्र , तुरंग पे आते हैं
बोधिसत्व हैं हमारे , बुद्धत्व जो पायें

श्रमण रूप से वन में , घोर तपस्या से
भोजन को त्याग करके , वीर्य ही करते हैं
दुर्बल तन से वन में , ध्यान ही करते हैं
कोन हैं ये विसमित मुनि , मुक्ति खोजते हैं
बोधिसत्व हैं हमारे , बुद्धत्व जो पायें

यहाँ खीर ग्रहण करके , नदी पार किये हैं
बोधिवृक्ष के छाह के निचे , कुश घास बिछायें
घास पे चीवर बिछा के , उस पे बैठ गये हैं
कोन हैं ये महाश्रमण , वजिरासन पे हैं
ये हैं मेरे बोधिसत्व , बुद्धत्व जो पायें

अंधकार गगन तल में , बिजली चमकते हैं
हाथी पे आते हैं मार , सेना भी लेके
घेर के भगवन बुद्ध को , पीड़ा करते हैं
महाविर्य मुनि कोन हैं ये , अटल से रहते हैं
ये हैं बोधिसत्व मेरे , बुद्धत्व जो पायें

बुद्ध को हटाने के लिए , मार प्रयास करता
अपने सेना सहित वो , बाधक ही करता
दायें हाथ से मुनि जी , धरती को ये कहता
कोन हैं ये निर्भय मुनि , धरती डोलाते हैं
ये हमारे भगवन हैं , बुद्धत्व जो पायें

डर के पापी मार यहाँ , हार के जाते हैं
दस बिम्बर मार सेना , डरके भागते हैं
मुनि जी विजय पाये हैं , देवगण खुशी हैं
महावीर मुनि कोन हैं ये , जय - विजय को पायें
ये हमारे भगवन हैं , वजिरासन धारे

देव - ब्रम्ह सभी खुशी से , साधुवाद करते
बोलके मुनि के जय , फूल गिराते हैं
बोधिवृक्ष के निचे मुनि जी , मध्यम हो जाते
कोन हैं ये विसमित मुनि , ज्ञान को पाते हैं

ये हमारे भगवन हैं , बुद्धत्व जो पायें

पूर्व काल जाते समय , मन शान्त हुए हैं
संसार के जिन्दगी सब , याद हो गए हैं
देखे बीत गए अतीत को , विद्या पाये हैं
कोन हैं ये ज्ञानी मुनि , वजिरासन धारे
ये हमारे भगवन हैं , बुद्धत्व जो पायें

सभी के मृत्यु जनम पे , मुनि मनन किये हैं
करम के अनुसार सभी , भवों को पाते हैं
भव सागर में डूबे जो , सभी को देखे हैं
कोन हैं ज्ञानी मुनि , दिव्य ज्ञान पायें
ये हमारे भगवन हैं , बुद्धत्व जो पायें

हेतु बनते - बनते समय , दुख ही बनते हैं
कारण नष्ट होने से , दुख ही नष्ट होते
हेतु नष्ट करके मुनि जी , दुख से मुक्त हुए हैं
कोन हैं ये ज्ञानी मुनि , निर्वाण को पायें
भगवन बुद्ध जी हैं मेरे , बुद्धत्व जो पायें

चाँद की रोशनी यहाँ पे , शीतल फैलाये
बोधिपत्र हिलके मुनि को , छाह की सुख दिए हैं

निर्वाण अमृत सुख से , खुशी से रहते हैं
कोन हैं ये महामुनि जी , रोशनी फैलाए
ये हमारे भगवन जी , विमुक्ति को पायें

21. देवता यहाँ आसमान में.....

देवता यहाँ आसमान में
सभी खुशी से नंचते गाते हैं
तथागत यहाँ विजय हुए हैं
सादु सादु उन बुद्ध को नमन है

सारे गन्दगी नष्ट किये हैं
वजिरासन पर मुनि जीते हैं
गौतम मुनि जी बुद्ध बन गए
बुद्ध रोशनी यहाँ से फैल गए

महाब्रम्ह जी दिल की खुशी से
छाता उढ़ाकर नमन किये हैं
गौतम मुनि जी बुद्ध बन गए
बुद्ध रोशनी यहाँ से फैल गए

गगन के बादल दूर हुए हैं
चाँद रोशनी से प्रकाश हुए हैं
हमारे गुरु बुद्ध बन गए
सादु सादु उन गुरु को नमन है

गहरी अंधकार नरक सभी भी
बुद्ध रोशनी से प्रकाश हुए हैं
आश्चर्य से सुख फैल गए
हमारे मुनि बुद्ध बन गए

पूरे विश्व को शान्ति मिले
ब्रम्हांड उसी दिन धन्य हो गए
आश्चर्य से सुख फैल गए
भगवन बुद्ध जी मुक्ति पाये हैं

धरती माता खुशी हो गई
धरती डुलाकर नमन भी की है
भूमि देवता धन्य हुए है
भगवन बुद्ध जी मुक्ति पाये हैं

फूल गगन में फैल गए हैं
दिव्य सुगंध से सुगंधित हुए
आश्चर्य ही यहाँ हुए हैं
हमारे गुरु बुद्ध बन गए

क्रोध गन्दगी नष्ट हुए हैं
उनके मन से लोभ मिट गए

मोह जाल से मुक्त हुए हैं
मेरे भगवन जी मुक्ति पाये हैं

खतरा जनम को खत्म किये हैं
अपने मन को जीत लिए हैं
आर्यसत्य को प्राप्त किये हैं
भगवन बुद्ध जी मुक्ति को पाये

दुखी जन को वे कृपा किये हैं
सभी को सदा दुख से बचाये हैं
सत्य ज्ञान से शान्ति को दिए
उन मेरे गुरु शरण जायेंगे

जगत का कल्याण के लिए सदा
दुख सहन किये सुख बाँट दिए
पूरे जिन्दगी सभी के लिए
बिताये हैं उन जगत स्वामी जी

नमन करेंगे हम सदा उन्हें
शरण जायेंगे दिल से हम उन्हें
उनके मार्ग हम अपनायेंगे
बुद्ध मार्ग हम शरण जायेंगे

वजिरासन को नमन करेंगे
बुद्ध ज्ञान को नमन करेंगे
ज्ञान की मंदिर नमन करेंगे
उन भगवन को शरण जायेंगे

देवता उन्हें शरण गए हैं
नाग असुर भी शरण गए हैं
जगत हम सब शरण जायेंगे
बुद्ध मार्ग हम अपनायेंगे

तुम हो विश्व के ज्ञान गुरु सदा
तुम हो ब्रम्ह जी मेरे भगवन जी
तू हो माता पिता तू ही है
तू हो मेरे मुक्ति दाता

तू है सूर्य जी चाँद भी तू है
तू है भगवन बुद्ध तू ही है
ज्ञान की दाता तू है मेरे गुरु
तू भगवन है तथागत मुनि

तू है विश्व के नाथ स्वामी जी
तू है मेरे शरण राह तू ही है

बिना तुझ से कुछ नहीं है सदा
शरण दो मुझे मेरे भगवन जी

तू हो कारुणिक जगत के गुरु तुम
तू है मेरे विमुक्ति दाता
ज्योति तू है अंधकार में
सबकुछ तू है हमारे गुरु

शरण दो मुझे रक्षा के लिए
ज्ञान दो मुझे मुक्ति के लिए
बुद्ध जी मेरे विश्व के गुरु
शरण जायेंगे दिल से हम उन्हें

पूरे देवता ब्रम्ह के लिए
जगत के हीत सुख के लिए सदा
फैल जाए उन बुद्ध की ये ज्ञान
बुद्ध शरण से जग सुखी रहे

भगवन बुद्ध के शरण को मिले
उन मेरे गुरु को नमन करेंगे

22. धर्म की गुण.....

शुरू मध्यम अन्त शुद्ध , मार्ग होते हैं
अवबोध को पाने का , वाणी भी होते हैं
महाकारुणिक ज्ञान से , प्रवचन देते हैं
भगवन बुद्ध की ये ज्ञान , स्वाक्खात ही हैं
साधु साधु हम धर्म के , शरण में जायेंगे

इस जनम में इस धर्म का , फल मिल जाते हैं
पाप मिटाकर पुण्य का , संचय करना हैं
सच्चा मित्र संगत से , धर्म को सुनना हैं
सन्दिग्ठीक बुद्ध धर्म , सही से जानना हैं
साधु साधु हम धर्म के , शरण में जायेंगे

आज कल भी पहले जैसा , भविष्य हर समय में
संसार को यह धर्म से , शांति मिलते हैं
शील समाधी ज्ञान से , विमुक्ति मिलते हैं
बुद्ध धर्म अकालिक है , हम अपनाएंगे

साधु साधु हम धर्म के , शरण में जायेंगे

धर्म छुपे हुए नहीं , सबको देख सकते
हमेशा यह खुला हुआ , सूरज चाँद जैसे
सत्य धर्म फैलने से , सदा चमकते हैं
धर्म एहिपस्सिको हैं , हम नमन करेंगे
साधु साधु हम धर्म के , शरण में जायेंगे

प्रसन्न मन से धर्म सुनके , उस में वीर्य करके
धर्म विनय अनुशासन , पालन करना हैं
आर्य धर्म अपनाकर , स्वयं देखना है
सद्धर्म के ओपनइक , गुण को वंदना हैं
साधु साधु हम धर्म के , शरण में जायेंगे

बुद्धिमान बुद्ध ज्ञान , सुनके शुद्ध मन से
धर्म पे आचरण करके , खुशी से रहते हैं
अपने अपने ज्ञान से ये , धर्म को पाना हैं
पच्चतं वेदितब्ब , विन्युं होते हैं

साधु साधु हम धर्म के , शरण में जायेंगे (3)

23. संघ की गुण.....

गन्दगी को मिटाने का , मार्ग अपनाके
धर्म विनय अनुसार ही , ब्रम्हचारी होते
बुद्ध शासन में आके , चीवर धारण से
उत्तम श्रावक संघ तो , सुपटिपन्न होते
साधु साधु महा संघ , हम शरण जायेंगे

दोनों अन्त दूर करके , मध्यम रास्ते से
शील समाधी ज्ञान से , विमुक्ति पाते हैं
अष्टांगिक मार्ग से ही , दुख खत्म किये हैं
उजुपटीपन्नो संघ को , मेरी वंदना है
साधु साधु महा संघ , हम शरण जायेंगे

अविद्या को मिटाने का , विपसन्ना करके
चार आर्य सत्य पर ही , मन को लगाते हैं

अवबोध को पाते हैं , आर्य के रास्ते से
न्यायपटीपन्नो संघ को , हम नमन करेंगे
साधु साधु महा संघ , हम शरण जायेंगे

मजाक व्यर्थ बात गाली , बोलते नहीं हैं
जीवन के सत्य राह , सदा दिखाते हैं
शांति सुख को पाने का , ज्ञान बताते हैं
सामिचिपटीपन्नो संघ को , मेरी वंदना है
साधु साधु महा संघ , हम शरण जायेंगे

मार्ग का फल चार हुए , युगल भी होते हैं
अलग अलग होने से , आठ लोग होते
प्राप्त किये आर्य सत्य , उत्तम श्रावक ने
बुद्ध की शासन प्रकाश है , उनके आचरण से
साधु साधु महा संघ , हम शरण जायेंगे

दूर जाके देने योग्य , वे आहुनेय्य हैं
आगंतुक दान योग्य , वे पाहुनेय्य हैं

पुण्य कमाने योग्य , वे दक्खीनेय्य हैं
अंजलीकरनी गुण को , मेरी वंदना है
साधु साधु महा संघ , हम शरण जायेंगे

ध्यान और ज्ञान से ही , शील को रखते हैं
संसार के सभी दुख से , विमुक्ति पाते हैं
अष्ट लोक धर्म से वे , कम्पित नहीं होते
संसार के पुण्य खेती , संघ को नमन हैं
साधु साधु महा संघ , हम शरण जायेंगे (3)

24. सप्त बुद्ध वंदना

1. विपस्सी भगवान बुद्ध जी

बोधिवृक्ष - पाटली

श्रावक - विधुर , तिस्स

उपस्थायक - अशोक भन्ते जी

उम्र - 80,000

राजधानी - बन्धमती

दुख तपस्या - 8 महिना

श्रावक गण - 160,000

अंधकार को खत्म किये जो

महाज्ञानी तथागत जी

सदकालिक सुख ही दिए जो

सर्वज्ञानी महामुनि जी

विपस्सी नाम से हमेशा

नमन लेते हैं बुद्ध जी
हाथ जोड़कर नमन करेंगे
स्वीकार कीजिये महाऋषि जी

सभी गन्दगी भष्म करके
जीत गए हैं सुगतमुनी जी
पाटली वृक्ष के नीचे से ही
मुक्ति पाए तथागत जी

सुगंध धूप, फूल, दिया सब
औषध पानी, शुद्ध पानी भी
पूजा करेंगे विपस्वी बुद्ध जी को
मुझे मिल जाये सुख निर्वाण की

2. सिखी भगवान बुद्ध जी

| | |
|------------|-------------------|
| माँ | - प्रभावती देवी |
| पिता | - अरुण राजा |
| श्रावक | - अभिभु , सम्भव |
| जाती | - क्षत्रिय |
| बोधिवृक्ष | - पुण्डरी |
| उपस्थायक | - खेमंकर भन्ते जी |
| उम्र | - 70,000 |
| राजधानी | - अरुणवती |
| दुख तपस्या | - 8 महिना |
| श्रावक गण | - 1,00000 |

पुण्डरी वृक्ष छा के नीचे से
पुरे संसार चमका दिए जो
जीतकर सभी गंदगियों को
मुक्ति पाए हैं तथागत जी

सिखी नाम से हर जगह पे
नमन लेते हैं सुगत मुनी जी
हाथ जोड़कर नमन करेंगे
स्वीकार कीजिये महा ऋषि जी

पीड़ा दुख सब मिटाए हैं

मेरे भगवन बुद्ध जी
आर्य मार्ग से ज्ञान पाए जो
महाज्ञानी तथागत जी

सुगंध धूप, फूल, दिया सब
औषध पानी, शुद्ध पानी भी
पूजा करेंगे सिखी बुद्ध जी को
मुझे मिल जाये निर्वाण की सुख

3. वेस्सभू भगवान बुद्ध जी

| | |
|------------|-----------------|
| माँ | - यशवती देवी |
| पिता | - सुप्पतित राजा |
| श्रावक | - सोन , उत्तर |
| जाती | - क्षत्रिय |
| उपस्थायक | - उपशान्त |
| बोधिवृक्ष | - साल |
| उम्र | - 60,000 |
| दुख तपस्या | - 6 महिना |
| श्रावक गण | - 80,000 |

वेस्सभु नाम से दुनिया में
चमकना भगवान सुगत जी
साल बोधि वृक्ष के नीचे
मुक्ति पाए तथागत जी

सभी लोक को कृपा करके

शांति सुख जो दिए बुद्ध जी
हाथ जोड़कर नमन करेंगे
स्वीकार कीजिये महाऋषि जी

शील ध्यान से ज्ञान फैलाये
वेस्सभु सम्बुद्ध जी
मधुर वाणी से ज्ञान बाँटे हैं
मेरे तथागत महामुनि जी

सुगंध धुप, फूल, दिया सब
औषध पानी, शुद्ध पानी भी
पूजा करेंगे वेस्सभु मुनि को
मुझे मिल जाये महानिर्वाण सुख

4. ककुसन्ध भगवान बुद्ध जी

माँ - विशाका ब्राम्हणी

पिता - अग्गिदत्त ब्राम्हण

श्रावक - विधुर , संजीव

जाती - ब्राम्हण

बोधिवृक्ष - शिरीष

उपस्थायक - बुद्धिज

उम्र - 40,000

राजधानी - खेमवती

दुख-तप - 8 महीना

श्रावक गण - 40,000

सुरज गगन में चमकना जैसा

दुनिया में आए जो तथागत जी

शिरीष वृक्ष के नीचे से ही

ज्ञान पाए हैं महामुनी जी

नाम से ककुसन्ध जगत में
नमन लेते हैं सुगत मुनी जी
हाथ जोड़कर नमन करेंगे
स्वीकार कीजिए महाऋषि जी

रोते-रोते रहनेवाले को
शान्ति दिए हैं महामुनी जी
खुशी-सुखी की अमर राह को
दिए कारुणिक तथागत जी

सुगंध धुप, फूल, दिया सब
औषध पानी, शुद्ध पानी भी
पूजा करेंगे ककुसन्ध भगवान बुद्ध को
मुझे मिल जाये अमर निर्वाण ही

5. कोणागमन भगवान बुद्ध जी

| | |
|-----------|----------------------|
| माँ | - उत्तरा ब्राम्हणी |
| पिता | - यग्यंदत्त ब्राम्हण |
| श्रावक | - भीयोस , उत्तर |
| जाती | - ब्राम्हण |
| बोधिवृक्ष | - उदुम्बर |
| उपस्थायक | - सोत्थीय |
| उम्र | - 30,000 |
| राजधानी | - सोमवती |
| दुख-तप | - 6 महीना |
| श्रावक गण | - 30,000 |

स्वर्ण मानव लोक जगा दिए
महा ज्ञानी तथागत जी
उदुम्बर की वृक्ष के नीचे
मुक्ति पाए है महा मुनी जी

नाम से कोणागमन की
नमन लेते हैं शिवंकर जी
हाथ जोड़कर नमन करेंगे
स्वीकार कीजिये महाऋषि जी

महा करुणा नेत्र है जो
कारुणिक सम्बुद्ध मुनि जी

बिना बादल से ही चमकना
पूर्ण चंद्र है सुगत मुनि जी

सुगंध धुप, फूल, दिया सब
औषध पानी, शुद्ध पानी भी
पूजा करेंगे कोणागमन भगवान बुद्ध को
मुझे मिल जाये महा निर्वाण सुख

6. काश्यप भगवान बुद्ध जी

| | |
|-----------|------------------------|
| माँ | - धनवती ब्राम्हणी |
| पिता | - ब्रम्हणदत्त ब्राम्हण |
| श्रावक | - तिस्स , भारद्वाज |
| जाती | - ब्राम्हण |
| बोधिवृक्ष | - बरगद |
| उपस्थायक | - सर्वमित्र |
| उम्र | - 20,000 |
| राजधानी | - कीकी |
| दुख-तप | - 7 महीना |
| श्रावक गण | - 20,000 |

सदाकालिक सुख ही दाता
कारुणिक सम्बुद्ध मुनि जी
बर की वृक्ष के नीचे से ही
जीत पाए हैं तथागत जी

शोक दुख पछताव मिटाकर
सदा सुख ही दिए मुनि जी
हाथ जोड़कर नमन करेंगे
स्वीकार कीजिये महाऋषि जी

विश्व को सुख देने आए हैं
तथागत सम्बुद्ध नाथ जी

सभी को सुख खुशी दिए हैं
महाकारुणिक जगत गुरु जी

सुगंध धुप, फूल, दिया सब

औषध पानी, शुद्ध पानी भी

पूजा करेंगे काश्यप भगवान बुद्ध को

मुझे मिल जाये महानिर्वाण सुख

7. गौतम भगवान बुद्ध जी

| | |
|-----------|------------------------|
| माँ | - महामाया देवी |
| पिता | - शुद्धोधन राजा |
| श्रावक | - सारिपुत्त , मोग्गलान |
| जाती | - क्षत्रिय |
| बोधिवृक्ष | - पीपल |
| उपस्थायक | - आनन्द |
| उम्र | - 80 |
| राजधानी | - कपिलवस्तु |
| दुख-तप | - 6 साल |
| श्रावक गण | - 1250 |

पुण्य को सम्पूर्ण करके
धरती पे आए हैं सर्वज्ञानी जी
पीपल वृक्ष के नीचे से ही
ज्ञान पाए हैं मेरे मुनि जी

नाम से गौतम ही विश्व में
नमन लेते हैं मेरे स्वामी जी
हाथ जोड़कर नमन करेंगे
स्वीकार कीजिये महाऋषि जी

ज्योति जलाए तिमिर मिटाकर
महाज्ञानी तथागत जी

हमें सुख शांति दिए हैं
हमारे गुरु तथागत जी

ग्रहन करके वज्रासन को
जीत लिए हैं सभी क्लेश को
बोधगया में जो ज्ञान प्राप्ति को
देव-ब्रम्ह मानव सुख पाए

दूर किए अविद्या को
प्राप्त किए हैं सत्य ज्ञान को
हाथ जोड़कर नमन करेंगे
स्वीकार कीजिये महाऋषि जी

सुगंध धूप, फूल, दिया सब
औषध पानी, शुद्ध पानी भी
पूजा करेंगे भगवान बुद्ध को
मुझे मिल जाये सुख निर्वाण की

साधु! साधु!! साधु!!!